विश्वासियों को फंसाने के लिए शैतान द्वारा इस्तेमाल किए
जाने वाले शास्त्र

शैतान अक्सर किन शास्त्रों का उपयोग करके विश्वासियों को ठोकर खाने पर मजबूर करता है?

जब शैतान किसी विश्वासी को नष्ट करना चाहता है, तो वह सिर्फ कमजोर समय पर हमला नहीं करता। बल्कि, वह उन्हें ऊँचे स्थान पर “उठा देता है”—एक आध्यात्मिक चोटी पर। क्योंकि वह जानता है, अगर कोई व्यक्ति निचले स्तर पर है, तो गिरना मामूली होगा और ठीक होना संभव है (नीतिवचन 24:16)। लेकिन अगर कोई ऊँचे स्थान पर है, तो एक छोटी सी फिसलन भी भारी गिरावट का कारण बन सकती है।

यह रणनीति यीशु के प्रलोभन में देखी जा सकती है (मत्ती 4:5-7; लूका 4:9-12)। शैतान ने यीशु को मन्दिर की चोटी पर ले जाकर चुनौती दी कि वे खुद को नीचे फेंक दें, और इसके लिए भजन 91:11-12 का हवाला देते हुए कहा कि परमेश्वर अपने लोगों की रक्षा करते हैं। भजन 91 में लिखा है कि जो लोग “महान परमेश्वर के छत्रछाया में रहते हैं” उनकी विशेष रक्षा होती है (भजन 91:1), और देवदूत उनकी सुरक्षा में तैनात रहते हैं।

भजन 91:10-13 कहता है:

“तुम पर कोई विपत्ति न आएगी,
न कोई प्रलय तुम्हारे घर के निकट पहुँचेगी।

विश्वासियों को फंसाने के लिए शैतान द्वारा इस्तेमाल किए जाने वाले शास्त्र

क्योंकि वह अपने देवदूतों को तुम्हारे लिए आज्ञा देगा,
कि वे तुम्हारे हर मार्ग में तुम्हारी रक्षा करें।
वे तुम्हें अपने हाथों में उठाएंगे,
ताकि तुम अपने पैर किसी पत्थर से न ठोको।
तुम शेर और नाग पर चलोगे,
शेर के शावक और सांप को तुम अपने पांव तले कुचलोगे।”

भजन 91 परमेश्वर की सुरक्षा और उनकी वचनबद्धता को दर्शाता है। यह बताता है कि परमेश्वर अपने विश्वासी बच्चों की गहन निगरानी करते हैं, लेकिन यह हमें परमेश्वर के वादों को लापरवाही से परखने की अनुमति नहीं देता।

यीशु ने शैतान को उत्तर देते हुए कहा:

“लिखित है, ‘अपने प्रभु परमेश्वर को परीक्षा में न डालो’”
(लूका 4:12; व्यवस्थाविवरण 6:16)।

यह दिखाता है कि परमेश्वर की सुरक्षा को नम्र विश्वास और आज्ञाकारिता के साथ स्वीकार करना चाहिए, न कि ढीठ या घमंडी ढंग से चुनौती देना।

विश्वासियों को फंसाने के लिए शैतान द्वारा इस्तेमाल किए
जाने वाले शास्त्र

शैतान भजन 91 का गलत उपयोग करके विश्वासियों में आध्यात्मिक गर्व और ढीठपन पैदा करना चाहता है। आज कई ईसाई ऐसे उपदेश सुनते हैं जो परमेश्वर की स्वीकृति और सुरक्षा पर जोर देते हैं—सही रूप से मसीह में अनुग्रह और सुरक्षा (रोमियों 8:38-39) की बात करते हैं—लेकिन वे पवित्रता और सतर्कता (इब्रानियों 12:14; 1 पतरस 1:15-16) को अनदेखा कर सकते हैं।

जब विश्वासियों को लगता है कि वे परमेश्वर के प्रेम के कारण पाप से अछूते हैं, तो वे आलस्य या पाप में फंस सकते हैं, झूठी सुरक्षा के भ्रम में (याकूब 1:14-15)। यह शैतान का एक तरीका है, जो विश्वासियों को पश्चाताप और पवित्रता से दूर ले जाता है (2 कुरिन्थियों 11:3)।

इब्रानियों 12:14 कहता है:

“सब लोगों के साथ शांति और पवित्रता प्राप्त करने का प्रयास करो; इसके बिना कोई भी प्रभु को नहीं देखेगा।”

यह स्पष्ट करता है कि परमेश्वर के साथ शाश्वत संबंध के लिए केवल आराम या सुरक्षा पर्याप्त नहीं है—हमें पवित्र जीवन जीने की आवश्यकता है। अंतिम दिनों में (2 तीमुथियुस 3:1-5), यह

विश्वासियों को फंसाने के लिए शैतान द्वारा इस्तेमाल किए
जाने वाले शास्त्र

महत्वपूर्ण है कि हमारा विश्वास संतुलित हो—जहाँ परमेश्वर के अनुग्रह पर भरोसा हो और साथ ही पवित्रता के प्रति गंभीर प्रतिबद्धता भी हो।

सारांश और अनुप्रयोग

1. परमेश्वर की सुरक्षा (भजन 91) वास्तविक है, लेकिन इसे नम्र विश्वास के साथ स्वीकार किया जाना चाहिए, ढीठ परीक्षण नहीं (लूका 4:12)।
2. शैतान विश्वासियों को गर्व और लापरवाही के पाप में फंसाने के लिए परमेश्वर के वादों का गलत उपयोग करता है।
3. विश्वासियों को पवित्रता की दिशा में लगातार प्रयास करना चाहिए (इब्रानियों 12:14) और केवल सुरक्षा या आराम पर निर्भर नहीं रहना चाहिए।
4. मसीह में सच्ची सुरक्षा में अनुग्रह और आज्ञाकारिता दोनों शामिल हैं (यूहन्ना 15:10; याकूब 2:17)।
5. प्रभु हमें यह ज्ञान दे कि हम इस सत्य में चलें और शैतान की चालों के खिलाफ दृढ़ खड़े रहें (इफिसियों 6:10-18)।

JIUNGE NA GROUP LETU LA WHATSAPP HAPA >> WHATSAPP GROUP….

Share on:
WhatsApp